प्रथम अध्याय

नासिरा शर्मा जीवन परिचय तथा रचना संसार

प्रथम अध्याय

नासिरा शर्मा - जीवन परिचय तथा रचना संसार

प्रस्तावना :

व्यक्ति और साहित्य दो भिन्न वस्तुएँ नहीं होती। किसी भी साहित्यकार का जीवन उसके साहित्य में प्रतिबिंबित होता है। साहित्यकार अपने साहित्य में खुद को प्रकट करने की कोशिश करता है। साहित्य का और उसके जीवन का संबन्ध होता ही है। साहित्यकार का जीवन, उसके अपने वंशगत स्वभाव, संस्कार, शिक्षा, विचार, भावनाएँ और संवेदनाएँ उसके जीवन का प्रतिबिंब होता है। लेखिका का व्यक्तित्व उसके साहित्य में दृष्टिगोचर होता है और उसके व्यक्तित्व का निर्माण उसके पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवेश में होता है। व्यक्ति के निर्माण में परंपरा और परिवेश की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। साहित्यकार भी मूलत: पहले व्यक्ति है। साहित्यकार के कृतित्व के अध्ययन के बिना उसके साहित्य को समझना असंभव है। रचनाकार के आंतरिक व्यक्तित्व को जानने के लिए उसकी रचनाएँ महत्त्वपूर्ण साधन है। नासिरा शर्मा आधुनिक हिंदी साहित्य की लेखिकाओं में एक बहुचर्चित नाम है। आज हिंदी साहित्य में नासिरा शर्मा का नाम बड़े आदर एवं सम्मान के साथ लिया जाता है। लेखिका ने अपने साहित्य में मुस्लिम समाज जीवन के यथार्थ का सजीव चित्रण किया है। एक ख्यातनाम लेखिका के रूप में नासिरा शर्मा की अपनी एक अलग पहचान बनी है। उन्होंने बड़ी सरलता और ईमानदारी से जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया है। सुसंस्कृत व्यक्तित्व संपन्न, प्रगतिशील विचारधारा की, 'मुस्लिम स्त्री' इस नाते उनका हिंदी साहित्य में विशेष स्थान रहा है। सीधी सरल भाषा में उन्होंने अपने साहित्य का निर्माण किया है। नासिरा शर्मा के जीवन के बारे में बहुत कम लिखा गया है। स्वयं नासिरा ने भी अपने जीवनवृत्त को लेकर कुछ नहीं लिखा हैं, न ही वो इसे

आवश्यक मानती है। नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व के बारे में हमें बहुत कम परिचय मिला है। फिर भी उनकी रचनाओं के माध्यम से इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समझना आवश्यक है। अत: प्रस्तुत अध्याय में नासिरा शर्मा के जीवन परिचय का विवेचन तथा विश्लेषण किया गया हैं।

1.1 नासिरा शर्मा का जीवनवृत्त :

1.1.1 जन्म :

"नासिरा शर्मा का जन्म एक संपन्न मुस्लिम शिया परिवार में शुक्रवार 22 अगस्त, 1948 को प्रात: काल के समय ठीक 4 बजे हुआ। नासिरा शर्मा का जन्म हिंदी का साहित्यिक केंद्र इलाहाबाद में हुआ। नासिरा शर्मा का जन्म अत्यन्त समृद्ध सुसंस्कृत एवं उच्चवर्गीय परिवार में हुआ।"[1]

1.1.2 माता - पिता :

नासिरा शर्मा जी के पिता प्रो.जमीर अली उर्दू के प्रोफेसर होने के साथ ही प्रगतिशिल विचारोंवाले प्रसिद्ध कवि भी थे। नासिरा शर्मा का परिवार शिक्षित और संपन्न था। "नासिरा शर्मा अपनी माँ नाझनीन बेगम को अपना प्रथम गुरू मानती है। महिलाओं की शिक्षा के प्रति उनकी माता के मन में बड़ा उत्साह है। इसलिए उनकी शिक्षा का आरंभ भी घर से ही हुआ। उनके माता-पिता दोनों भी खुले विचारों के थे और वे शिक्षा एवं परंपराओं पर विश्वास रखते थे।"[2] पिता कवि होने के कारण लेखिका नासिरा शर्मा को अपने साहित्य सृजन में थोड़ा बहुत मार्गदर्शन मिला। पिता की साहित्यिक प्रवृत्ति का प्रभाव नासिरा के साहित्यिक व्यक्तित्व पर पड़ा इसलिए उनका साहित्य मूल्यवान साहित्य बन गया।

1.1.3 बचपन :

नासिरा शर्मा का बचपन बड़े लाड़ प्यार में बिता। घर में सबसे छोटी होने की कारण उनकी हर एक खुशी का खयाल रखा जाता था। नासिरा शर्मा का बचपन

रियासती वातावरण में ऐशो-आराम में बीता।

1.1.4 शिक्षा :

नासिरा शर्मा की शिक्षा का आरंभ घर से ही हुआ। वे अपनी माँ को अपना प्रथम गुरू मानती हैं। उनकी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा इलाहाबाद के कॉन्वेंट में हुई। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से फारसी भाषा-साहित्य में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। 'ईरान' उनके साहित्यिक शोध का विषय रहा है। औपचारिक शिक्षा के साथ उन्हें व्यवहारिक शिक्षा भी मिली।

1.1.5 नौकरी :

नासिरा शर्मा अपनी शिक्षा पूरी होने के बाद दिल्ली में जामिया मिलिया विश्वविद्यालय में फारसी भाषा की प्रवक्ता बनी, पर कार्य की व्यस्तता और अध्ययन के लिए बाहरी देशों में जाने में आनेवाली कठिनाइयों के कारण यह कार्य उन्होंने छोड़ दिया। आयानगर रेडिओ स्टेशन पर भी वे कई माह तक प्रोग्राम ऑफिसर के रूप में सेवारत थीं। अब वह स्वतंत्र रूप से लेखन के कार्य को ही वे अहम महत्त्व दे रही हैं।

1.1.6 विवाह :

नासिरा शर्मा जी ने आंतरधर्मीय प्रेमविवाह किया है। उन्होंने अपनी पारंपारिक मान्यताओं को तोड़कर डॉ.रामचंद्र शर्मा के साथ आंतरधर्मीय प्रेमविवाह किया। मनुष्य के जीवन में विवाह एक महत्त्वपूर्ण संस्कार माना जाता है। नासिरा शर्मा जी ने दोनों धर्मों के कर्मकांड को नकारते हुए अपने संविधान और कानून द्वारा अपना अधिकार प्राप्त किया।

आंतरधर्मीय विवाह के बारे में नासिरा शर्मा के अपने विचार हैं। इस बारे डॉ.शशी जेकब कहती है - "यदि इन्सानियत पर विश्वास हो धर्म के प्रति उदात्तभाव हो तभी विवाह करना चाहिए वरना नहीं। होता यह है कि ऐसे विवाह के बाद दोनों पक्ष अपने अपने धर्म रीति रिवाज से चिपक जाते हैं।"[3] विवाह से पहले अपने धर्म को भूल

जाते हैं लेकिन विवाह के बाद अपने-अपने धर्म के प्रति एकनिष्ठ रहते हैं। इसलिए इन दोनों से अलगाव का डरसा लगा रहता है। ऐसे कितने तो विवाह असफल हो चुके हैं और प्रेम का विस्तार संकिर्णता ले लेता है। शुरू में दोनों का आपस में व्यवहार ठीक रहता है लेकिन आपसी मालूमात न होने की वजह से पती-पत्नी ऐसे विवाह से कुंठित रह जाते हैं। लेकिन नासिरा शर्मा के विवाह के बाद ऐसा प्रश्न ही निर्माण नहीं हुआ। दोनों का जीवन सफल रहा।

1.1.7 वैवाहिक जीवन :

नासिरा शर्मा का प्रेमविवाह हुआ है। औरों के प्रेमविवाह की तरह लेखिका के विवाह के बाद कोई कठिनाई सामने नहीं आई। नासिरा शर्मा का वैवाहिक जीवन अत्यंत सफल रहा है। जब डॉ.शर्मा इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे भूगोल के अध्यापक के रूप में कार्य करते थे तब तक वे वहीं इलाहाबाद में रहें।नासिरा शर्मा के दो बच्चे है बेटा अनिल और बेटी अंजु। अंजु का गोपल गंज में विवाह हुआ है। डॉ.शर्मा के बारे में डॉ.शशि जेकब लेखिका लिखती है -"डॉ.शर्मा अस्पताल, बीमारी, कोर्ट कचहरी की झझटों से बहुत घबराते हैं। ऐसे मौकों पर उन्हें नासिरा शर्मा की मदद मिलती है।"[4] नासिरा शर्मा और डॉ.शर्मा का अंतर्धर्मीय विवाह हुआ इसलिए इसकी चिंता वे नहीं करती हैं। समाज की प्रतिक्रिया के डर से वे कभी भी पीछे नहीं हटीं। वो इस समाज का सामना करने के लिए तैयार रहती हैं। नासिरा शर्मा की प्रबल इच्छा शक्ति तथा् उनका डॉ.शर्मा के प्रति गहरा प्रेम और डॉ.रामचंद्र शर्मा के सहयोग के बलबूते पर उनका वैवाहिक जीवन एक आदर्श रूप हमारे सामने रखता है।

1.1.8 पारिवारिक परिचय :

नासिरा शर्मा को अपने परिवार में अपने माँ-बाप का विशेष स्नेह मिला। नासिरा शर्मा ने समाज की मान्यताओं एवं मर्यादाओं को तोड़कर डॉ.रामचंद्र शर्मा के साथ अंतर्धर्मीय प्रेमविवाह किया। नासिरा शर्मा का पारिवारिक जीवन सुखी-संपन्न और

खुशियों से भरा रहा है। वे आदर्श गृहणी, आदर्शवादी, ममतामयी माँ तथा संवेदनशील लेखिका हैं। अपने घरेलू जिंदगी के साथ लेखन कार्य और पढ़ने में सतर्क रही। हमेशा पारिवारिक जीवन और साहित्यिक कार्य के कारण व्यस्त रहती थी। एक आदर्श घरेलू तथा अलग किस्म की लेखिका के रूप में नासिरा शर्मा को जाना जाता है। पारिवारिक जीवन में वे अपने पति के साथ अपने बच्चों के साथ खुश हैं। नासिरा शर्मा जी को आंतरजातीय प्रेमविवाह करके कई परेशानी या कठिनाई महसूस नहीं हुई। अधिकतर प्रेमविवाह आगे चलकर टूट जाते हैं लेकिन वो शादी से पहले और शादी के बाद का भी जीवन अत्यंत सफलतापूर्वक जी रही हैं।

1.2 नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व :

व्यक्तित्व का अर्थ श्री नवलजी के मतानुसार - "व्यक्तित्व के वे विशेष गुण जिनके दवारा किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सूचित होती है।"[5] नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व भी ऐसा ही दिखाई देता है। जिनका शारिरीक रूप शैली को प्रभावित कर देता है। डॉ.सरोज मार्कण्डेय ने व्यक्तित्व के बारे में अपना मंतव्य कुछ इस तरह से हमारे सामने प्रस्तुत किया है कि - "व्यक्तित्व मात्र शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक, पूँजीभूत रूप है।"[6] व्यक्तित्व के भी दो रूप माने गए हैं।

1. अंतरंग व्यक्तित्व
2. बहिरंग व्यक्तित्व

1.2.1 अंतरंग व्यक्तित्व :

किसी भी व्यक्ति के अंतरंग व्यक्तित्व को समझना इतना आसान नहीं है। अंतरंग व्यक्तित्व से मनुष्य के मन में किस तरह के विचार हैं, इस बात का पता चलता है और इस अंतरंग व्यक्तित्व से ही व्यक्ति की सही मायने में पहचान होती है।

1.2.2 बहिरंग व्यक्तित्व :

व्यक्ति का जो चित्र हमारे सामने आता है। वह बहिरंग व्यक्तित्व होता है

व्यक्ति की चाल-ढाल, आदतें, बातें यह सभी बहिरंग व्यक्तित्व के अंतर्गत आते हैं। बहिरंग व्यक्तित्व से नासिरा शर्मा की स्वभावगत विशेषताओं का पता चलता है। उनके स्वभाव में सादगी और गंभीरता दिखाई देती है। नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व संयमी, सरल और सादगी से भरा हुआ है। नासिरा शर्मा जी अपने व्यक्तित्व के बारे में लिखती हैं - "मेरा चेहरा शायद अंतरराष्ट्रीय है। ठीक मेरी सोच की तरह क्योंकि कोई मुझे इटालियन या फिर पठान तो कोई ईरानी तो कोई पंजाबी, कश्मीरी कहता है।... मैं अक्सर शुक्र अदा करती हूँ कि मेरी शक्ल इन्सानों से मिलती है वरना अक्सर चेहरे जानवरों से भी मिलने लगते हैं - जैसे खुँखार और संवेदनशील।"[7] नासिरा शर्मा हमेशा हँसमुख दिखाई देती है। वे अपने घर आनेवाले हर मेहमान का स्वागत हँसते हुए और खुशी से करती है। जिससे आपस की दूरी कम होती हैं। पलभर में सादगी और पलभर में गंभीरता यह उनकी स्वभावगत विशेषता है। वे निस्वार्थी हैं और उदार व्यक्तित्व की महिला लेखिका हैं। नासिरा जी समय का भी बड़ा ध्यान रखती हैं और अक्सर अपने साहित्यिक कर्म में मगन रहती हैं।

1.2.3 व्यक्तित्व की विशेषताएँ :

नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व की विशेषताएँ कुछ खास रही हैं। नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व आदर्शवादी एवं ध्येयवादी रहा है। नासिरा शर्मा जी अपने व्यक्तित्व से ही सभी को प्रभावित करती हैं। उनका अतिथि के प्रति जो स्नेह रहा है। वह सबको प्रभावित किए बिना नहीं रहता।

1.2.3.1 आतिथ्यशील :

नासिरा शर्मा से जो भी मिलने आता हैं, वह उनका स्वागत हास्य मुद्रा से करती हैं।नासिरा शर्मा का हास्य सभी को प्रभावित कर देता है। प्राचीन मान्यता की तरह 'अतिथि देवो भव' याने अतिथि ईश्वर का ही रूप होता है।इस तरह उनका अतिथि के प्रति आदर, प्रेम तथा सन्मान रहा है।

1.2.3.2 स्पष्टोक्ति :

नासिरा शर्मा के स्वभाव में स्पष्टता का गुण है। इसका परिचय हमें उनके साहित्य से मिलता है। स्पष्टोक्ति यह उनके व्यक्तित्व की खास विशेषता रही है। नासिरा शर्मा के परिवार में जब बेटी अंजु के विवाह का प्रसंग आता है तब पति के रूप में विहारी सुन्नी मुसलमान लड़के को पसंद करती हैं। तब नासिरा शर्मा ने लड़के के घरवालों से कहा था - "मैं बारातियों का किराया नहीं दूँगी, लड़की ब्याहनी है, तो अपने बलबुते पर आइए। दहेज नहीं दूँगी, ऐसी कोई हरकत नहीं करूँगी जिसके खिलाफ लिखती और बोलती आई हूँ। सिर्फ लड़की दूँगी।"[8] इस उदाहरण से ही नासिरा शर्मा की स्पष्टोक्ति हमें नजर आती है।

1.2.3.3 बौद्धिकता :

नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व में उनकी बौद्धिकता नजर आती है।नासिरा शर्मा ने अपने साहित्य में बौद्धिकता एवं सतर्कता का परिचय दिया है।उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से नारी जीवन की समस्या एवं साम्प्रदायिकता की समस्या को असरदार शैली में प्रस्तुत किया है। नासिरा शर्मा जी का साहित्य समाज के लिए पथप्रदर्शक रहा है।

1.2.3.4 भावात्मकता :

साहित्य समाज का दर्पण होता है। नासिरा शर्मा अपने साहित्य में समाज की भावना को प्रस्तुत करती है। उस समय वह स्वयं भी भावना प्रधान होती है। स्पष्टोक्ति लेखिकाओं में नासिरा शर्मा का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। अपनी बेटी अंजु के विवाह के समय वो अत्यन्त गदगद हो गयी थीं।

1.2.3.5 परंपराओं पर विश्वास :

नासिरा शर्मा समाज एवं संस्कृति की हिमायती हैं। प्राचीन मान्यता परंपराओं पर विश्वास रखती हैं। प्राचीन मान्यता के बारे में उन्होंने अपना मंतव्य प्रकट

किया है कि - "प्राचीन विश्वासों के प्रति मेरा नजरिया बहूत साफ है कि बेशक वे हमारे वर्तमान प्रश्नों एवं समस्याओं का समाधान नहीं बन सकते हैं मगर उस परंपरा की जिसकी आदत हमकों पड़ चुकी और शताब्दियों से हमारी संतो से देने की शक्ति रखती है - जब हम अपने ऊपर से विश्वास खो देते है। ऐसे डगमगाते समय आराधना और आस्था ही इन्सान को बल देकर उसमें ऊर्जा का संचार करती है।"[9]

1.2.3.6 धर्मनिरपेक्ष दृष्टि :

धर्म के बारे में अपने-अपने विचार होते हैं। लेकिन नासिरा शर्मा धार्मिक कर्मकांडो के विरोधी रही हैं। 'नमाज और रोजा में उनका कभी दिल नहीं लगा है।उनका विवाह भी धार्मिक परंपराओं के विरूद्ध ही हुआ है। राम मंदिर से संबंधित किस्सों में भी उनके धार्मिक विचारों का परिचय हमें मिलता है।"[10] जब मेरे टाइपिस्ट बसवेश्वर राम मंदिर बुलाते तो मैं जाती थीं, वे पूजा करते तो मैं भी करती। एक बार मेरा बेटा साथ था। हम वहाँ गए। बाबाजी से मिले जो अब जिवीत नहीं हैं। बसवेश्वर जी उनके चरणोंपर झुके। मैं पहले तनी रही, अपने से लड़ती हुई फिर झुक गई। बेटे ने देखा उसकी आँखों में आश्चर्य था। उक्त कथन से स्पष्ट है कि वे धर्म-धर्म में भेद नहीं करती। इसलिए तो वे सभी धर्मो के पवित्र स्थल पर जाती रहीं।

आधुनिक युग की महिला कहानीकारों के रूप में हिंदी कथा साहित्य में नासिरा शर्मा ने अपना विशिष्ट स्थान बनाया है।वे कभी स्त्री-पुरूष में भेद नहीं करती थी।हमेशा स्पष्टोक्ति तथा एक आदर्शवादी लेखिका के रूप में चर्चा के केंद्र में रही हैं।

1.3 पुरस्कार एवं सम्मान :

नासिरा शर्मा को साहित्य क्षेत्र में अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत तथा सन्मानित किया गया है।उन्होंने कहानी, उपन्यास, समीक्षा आदि विविध क्षेत्रों में अपनी लेखनी का कमाल दिखाया है।नासिरा शर्मा को हिंदी अकादमी दिल्ली द्वारा हिंदी सेवा के लिए 'अर्पण सम्मान','महादेवी वर्मा पुरस्कार',आदि सम्मानों से सम्मानित किया गया है। उन्होंने अपने लेखन से यह संदेश दिया है कि इन्सान को इन्सान की तरह व्यवहार

करना होगा। नासिरा शर्मा के दस कहानी संग्रह हैं, चार उपन्यास और एक लेखसंग्रह भी हैं। एक समीक्षात्मक अध्ययन तथा दो का अनुवाद संपादन कार्य किया है। उन्हें साहित्यिक जीवन में अत्यंत सफलता प्राप्त हुई है।उन्होंने जो भी लिखा वह मानवीय यथार्थ या वर्तमान काल में घटित घटनाओं को केन्द्रबिंदू मानकर लिखा है।

1.5 नासिरा शर्मा का रचना संसार :

साठोत्तरी लेखिकाओं में एक कहानीकार के रूप में नासिरा शर्मा का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। नासिरा शर्मा का लेखन कार्य कहानी से शुरू होता हैं। कहानी के साथ-साथ उपन्यास, लेख अनुवाद तथा संपादन के क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी कलम चलाई है।

1.5.1 कहानी संग्रह :

नासिरा शर्मा जी का साहित्य क्षेत्र में प्रवेश मूलत: कहानीकार के माध्यम से हुआ है।नासिरा शर्मा जी ने इस क्षेत्र में पुरूषों के साथ अपना स्थान बना लिया है।उन्हें कहानीकार के रूप में ख्याति प्राप्त हुई है।'पत्रिका' के माध्यम से भी उन्होंने अपने रचना संसार को उन्नत किया है।उनकी कहानियों में जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है।

1.5.1.1 पत्थर गली :

नासिरा शर्मा जी ने अपना कहानी लेखन का कार्य जारी रखा। उनका पहला कहानी संग्रह सन् **1986** में 'पत्थर गली' नाम से प्रकाशित हुआ। इसमें मुस्लिम समाज की रूढ़ीग्रस्त परंपराओं का चित्रण है। इसमें लेखिका ने कुल आठ कहानियाँ में प्रस्तुत की हैं। नासिरा शर्मा के अधिकांश साहित्य में मुस्लिम समाज जीवन का ही चित्रण हुआ है।

1.5.1.2 संगसार :

नासिरा शर्मा के 'पत्थर गली' के बाद दूसरा प्रकाशित कहानी संग्रह 'संगसार' है जो **1993** में प्रकाशित हुआ। इस कहानी संग्रह में कुल उन्नीस कहानियाँ

संकलित हैं। इस कहानीसंग्रह में नासिरा शर्मा जी ने मानवीय चेतना, तीखी संवेदना और मार्मिक अभिव्यंजना का सुंदर समन्वय किया है। नासिरा शर्मा जी ने अलग-अलग विषयों को लेकर कहानीसंग्रह को प्रकाशित किए हैं।

1.5.1.2 इब्ने मरियम :

नासिरा शर्मा का दूसरा कहानीसंग्रह सन् **1944** में प्रकाशित हुआ था जिसका नाम है 'इब्ने मरियम'। इसमें कुल **13** कहानियों को संग्रहीत किया गया है।

1.5.1.4 शाल्मी कागज :

नासिरा शर्मा का तीसरा कहानी संग्रह जिसमें सोलह कहानियाँ से संग्रहीत है। लेखिका ने इस कहानीसंग्रह में जो देखा, समझा और महसूस किया उसको ही अभिव्यक्त किया है।

1.5.1.5 सबीना के चालीस चोर :

'सबीना के चालीस चोर' यह कहानी संग्रह सन् **1947** में प्रकाशित हुआ है। जिसमें भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण किया गया है।

1.5.1.6 खुदा की वापसी :

नासिरा शर्मा का छठा कहानी संग्रह 'खुदा की वापसी' सन् **1999** में प्रकाशित हुआ है। इस कहानीसंग्रह में कुल नौं कहानियाँ संग्रहित हैं।

1.5.1.7 इन्सानी नस्ल :

नासिरा शर्मा का इन्सानी नस्ल का या कहानी संग्रह का सन् **2001** में प्रकाशित आठवाँ कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह में तेरह कहानियों को संग्रहित किया गया हैं। नाम से ही पता चलता है कि इसमें इन्सान को विशेष महत्त्व दिया गया है।

'शेष कहानियाँ' सन् **2000** में प्रकाशित संग्रह है। उसमें कुल सात कहानियाँ हैं।

1.5.1.8 दूसरा ताजमहल :

नासिरा शर्मा का नौवाँ कहानी संग्रह सन् 2002 में प्रकाशित हुआ। जिसका शीर्षक है 'दूसरा ताजमहल'। इस संग्रह में भी सात कहानियों को प्रस्तुत किया हुआ है।

1.5.2 उपन्यास साहित्य :

नासिरा शर्मा का जिस प्रकार कहानी के प्रति स्नेह रहा है उसी प्रकार उपन्यास साहित्य के प्रति भी लगाव रहा है। उनके लेखन का मूल उद्देश्य अन्य रचनाकारों के तरह पैसा, शान-ए-शौहरत कमाना नहीं बल्कि मानव समाज, समाज में घटित घटनाएँ, सांप्रदायिकता और उसका आम आदमी पर होनेवाला दुष्परिणाम आदि को प्रस्तुत करना रहा है। उपन्यास के क्षेत्र में उनके चार उपन्यास आये हैं। समकालीन महिला उपन्यासकारों में नासिरा शर्मा का स्थान महत्त्वपूर्ण है। कहानी साहित्य में वरिष्ठ स्थान प्राप्त करनेवाली लेखिका नासिरा शर्मा उपन्यास के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। नासिरा शर्मा के अभी तक चार उपन्यास प्रकाशित हुए है। समाज की स्थिति, भारत विभाजन तथा आधुनिक नारी आदि विषयों को लेकर उन्होंने अपने उपन्यास प्रस्तुत किए हैं। अत: उनके प्रकाशित उपन्यासों संक्षिप्त का विवेचन यहाँ पर इस तरह प्रस्तुत किया जा रहा है।

1.5.2.1 शाल्मली :

नासिरा शर्मा दवारा लिखा गया यह उनका पहला उपन्यास सन् 1987 में प्रकाशित हुआ है।अभी तक इस उपन्यास के चार संस्करण उलपब्ध हुए हैं। इस उपन्यास में नासिरा शर्मा जी ने आधुनिक नारी का चित्रण किया है।आधुनिक नारी का समाज में क्या स्थान हैं? तथा समाज का आधुनिक नारी के प्रति देखने का दृष्टिकोन क्या है? इन प्रश्नों को उपन्यास में प्रस्तुत किया गया हैं।

1.5.2.2 ठीकरे की मँगनी :

नासिरा शर्मा का दूसरा उपन्यास 'ठीकरे की मँगनी' है जो सन् 1989 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का प्रकाशन किताबघर की ओर से हुआ है। इस उपन्यास में नासिरा शर्मा ने मुस्लिम समाज में स्त्री की जो स्थिति है उस पर प्रकाश डाला है। उस स्त्री को किस तरह से रूढ़ियों से ग्रस्त माहौल में घुटन का जीवन बीताना पड़ता है उसका चित्रण इस उपन्यास में किया गया है।

नासिरा शर्मा के साहित्य में मुस्लिम स्त्री जीवन, मुस्लिम परिवेश तथा उनकी समस्याएँ तथा हिंदू-मुस्लिम एकता तथा विभाजन आदि बातों को प्रस्तुत किया है। 'ठीकरे की मँगनी' उपन्यास भारत विभाजन की त्रासदी पर लिखा गया उपन्यास है।

1.5.2.3 जिंदा मुहावरे :

नासिरा शर्मा का सन् 1994 में प्रकाशित भारत-विभाजन की त्रासदी पर आधारित यह उपन्यास है। इस उपन्यास में धर्म के नाम पर विभाजन दिखाया गया है। आनेवाली नस्लों के नाम लिखा हुआ यह उपन्यास 'जिंदा मुहावरें' बहुचर्चित उपन्यास है। नासिरा शर्मा जी की यह मौलिक रचना है।

"'जिंदा मुहावरें' भारत में रह रहे मुसलमानों के समस्याओं के कथा के सबसे दु:खद उनका मुख्य धारा से अलगाव बोध था। जाति वर्ग पर आधारित इस आधुनिक चेतना के समांतर ही सांप्रदायिकता की आग में जलती मनुष्यता को बचाने के प्रयत्न भी हिन्दी उपन्यासकारों में नासिरा शर्मा ने किए हैं। 'जिंदा मुहावरें' में धर्म निरपेक्षता के धरातल पर उठती मानवीय संवेदना को ही नासिरा शर्मा ने रूपायित किया है।"[11] भारत-विभाजन हिन्दुओं के लिए जितना विनाशकारी था उतना ही विनाशकारी मुस्लिमों के लिए भी था। या भारत में रहनेवाले मुस्लिमों के लिए यह एक हादसा था। मुस्लिम समाज की जिन्दगी का प्रामाणिक दस्तावेज उनके इस उपन्यास में मिलता है। "उनका उपन्यास मानवीय नियति का साक्षात्कार करता है। साथ ही मानवीय संबंधों को धर्म से परे देखने का संवेदनशील प्रयास नासिरा शर्मा ने किया है। भारतीय मुसलमानों की

घरेलु जिंदगी का विश्वसनीय चित्रांकन किया गया है। नासिरा शर्मा समकालीन हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण रचनाकार रही हैं।"[12]

नासिरा शर्मा ने हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में लेखन कर आधुनिक महिला रचनाकारों में विशेष स्थान पाया है। कहानी विधा से अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत करते-करते उपन्यास विधा में भी उन्होंने अपना योगदान दिया है। स्वातंत्र्योत्तर लेखिकाओं में नासिरा शर्मा का स्थान महत्त्वपूर्ण है। कहानी उपन्यास के साथ-साथ उन्होंने कई लेख संग्रह भी प्रकाशित किए हैं। जिसमें अधिकतर वैचारिक लेख लिखकर अपनी भूमिका निभाई है। उनके 'राष्ट्र और मुसलमान' शीर्षक के लेख से ही पता चलता है कि यह एक मौलिक लेख संग्रह है। जो सन् 2002 में प्रकाशित हुआ है। यह सन् 1991 से 1999 तक विविध मुस्लिम पात्रों के संदर्भ में लिखा गया लेख है।

लेख संग्रह के साथ उन्होंने समीक्षा ग्रंथो को भी महत्त्व दिया जिसमें 'किताब के बहाने' जो 2001 में उन्होंने अनुवादित किया है।अनुवाद क्षेत्र में उन्होंने अपना स्थान बनाया। उन्होंने 1) किस्सा जाम का और 2) प्रेम कथा को अनुदित किया है। 1994 तथा 2001 में प्रकाशित रचनाओं में संपादन के क्षेत्र में भी अपनी लेखनी चलाई है। नासिरा शर्मा ने हिंदी साहित्य की गद्य विधा में नाटक विधा को अपवाद मानकर अन्य सभी विधा में अपना स्थान बनाए रखा। एक रचनाकार के रूप में नासिरा शर्मा ने का बहुमूल्य योगदान दिखाई देता है। बहुआयामी लेखिका नासिरा शर्मा अपने परिवार को सँभालने के साथ-साथ लेखन कार्य कि ओर भी ध्यान दिया। जिससे एक सफल रचनाकार के रूप में हमारे सामने दिखाई देती हैं। नासिरा शर्मा जी ने 'इकोज ऑफ ईशनियन रिवोल्युशन प्रोटेस्ट पोयटरी' तथा 'क्षितिज पार' के संपादन का कार्य किया है। नासिर शर्मा का रचना संसार बहुआयामी तथा विशाल रहा है। अत: स्वातंत्र्योत्तर जिससे स्वातंत्र्योत्तर लेखिका में नासिरा शर्मा का नाम विशेष रूप से लिया जाता है।

निष्कर्ष :

नासिरा शर्मा का जन्म संपन्न परिवार में हुआ। उनके व्यक्तित्व निर्माण में जहाँ एक ओर उनकी मॉ का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा हैं वहीं दूसरी ओर स्वयं अपने को तराशकर अधिक निखार लाया है। परिश्रमी और दृढनिश्चयी नासिरा शर्मा की मॉ ने इसे अच्छी तरह से सॅभाला और लेखिका बहुत पढ़ाया। उनके अध्ययन में कभी कोई कमी महसूस नहीं होने दी। इसलिए नासिरा शर्मा अपनी माँ को गुरू मानती है। व्यक्तित्व गरिमामय एवं प्रभावशाली रहा है। उनके साहित्य में उनकी अपनी माँ का योगदान भी महत्त्वपूर्ण रहा है। उनके पिता से उन्हें प्रगतिशील विचारों की विरासत मिली। उनकी कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ा। धार्मिक कर्मकाण्डों से वे दूर रहते हुए ब्राह्मण परिवार के रामचन्द्र शर्मा से अंतधर्मीय प्रेमविवाह किया है। वे अपने संपन्न जीवन संतुष्ट है। शर्मा जी भूगोल विषय के जानेमाने अध्यापक रहे है। उनकी स्वभावगत विशेषताओं में अतिथ्यशीलता, स्पष्टता, परंपराओं का विरोध आदि महत्त्वपूर्ण है। शर्मा ने साहित्य के क्षेत्र में 28 वर्षों से लेखन किया। जिसमें कहानी, उपन्यास, अनुवाद, समीक्षा आदि क्षेत्र में सफल लेखन किया है। उन्होंने अपने साहित्य द्वारा इन्सान को इन्सान बने रहने के लिए प्रेरित किया है। लेकिन उन्होंने कभी किसी धर्म में भेद नहीं किया।उनका रामचंद्र शर्मा से अंतरर्धर्मीय प्रेमविाह अत्यंत सफल रहा है। साहित्यिक रचना की शुरूवात कहानी से लेकर उपन्यास अनुवाद आदि रचनाओं में सफलता के साथ हुआ है। स्वयं को अपने बलबुते पर खड़ा होने की ताकद उनमें थी।

नासिरा शर्मा एक उच्चकोटी के साहित्यकार हैं। उन्होंने साहित्य की विधाओं में लेखन करते समाज समज-जीवन धार्मिक कट्टरता, समस्याएँ आदि का चित्रण किया है। मानव की त्रासदी, मानवीय समस्याएँ, रूढ़िग्रस्त समाज जीवन तथा मुस्लिम समाज जीवन का बड़ा ही यथार्थ चित्रांकन किया है। यह एक तरह से मुस्लिम समाज जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1.	डॉ.विजयकुमार राऊत	-	'नासिरा शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व' अप्रकाशित पीएच.डी. शोधप्रबंध से उद्धृत
2	वहीं	-	पृ. 6, 7
3.	डॉ.शशी जेकब	-	'महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता', पृ. 236
4.	वही		पृ. 238
5.	श्री नवलजी	-	'नालंदा विशाल शब्दसागर' पृ. 1309
6.	डॉ.सरोज मार्कण्डेय	-	'निराला के साहित्य में युगीन समस्याएँ' पृ. 182
7.	डॉ.रामेशचंद गुप्त	-	'बिहारी व्यक्तित्व एवं जीवनदर्शन' पृ. 37
8.	नासिरा शर्मा	-	'राष्ट्र और मुसलमान' पृ. 174
9.	वही	-	पृ. 175
10.	नासिरा शर्मा	-	'खुदा की वापसी' पृ. 30
11.	नासिरा शर्मा	-	'जिंदा मुहावरे' पृ. 11
12.	सत्यदेव त्रिपाठी	-	'हिंदी उपन्यास समकालीन संदर्भ' पृ. 325